SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

बाइबल भलाई और बुराई के विषय में क्या कहती है? — आधारशिला · स्ट्रॉन्ग की संख्याओं सहित केजेवी पवित्रशास्त्र

THE FOUNDATION · THE ORIGINAL STUDY, SET IN THE ANCIENT ORDER

अच्छाई और बुराई — मूलभूत बाइबिल सिद्धांत

उद्घाटन शब्द

स्वर्ग के नीचे हर मनुष्य के सामने दो बातें खड़ी हैं: एक ओर जीवन और भलाई, दूसरी ओर मृत्यु और बुराई। प्रभु चाहता है कि उसके लोग, जब पूर्ण रूप से बड़े हो जाएं, तो अपनी ज्ञानेंद्रियों को इन दोनों में भेद करने के लिए प्रशिक्षित करें। बुराई करने वालों को ध्यान से देखो, क्योंकि पवित्रशास्त्र उन्हें स्पष्ट रूप से दिखाता है। वे बुराई करना जानते हैं परन्तु भलाई करने का ज्ञान उनमें नहीं है। वे जानबूझकर हानि की योजना बनाते हैं। वे उसके इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि वह उनका अंग बन जाती है, मानो उनकी अपनी त्वचा हो। अंत में वे तब तक सो भी नहीं सकते जब तक उन्होंने कुछ बुरा न किया हो। ऐसा हृदय कहाँ से आरम्भ हुआ? वाटिका की ओर लौट चलो। वहाँ जीवन का वृक्ष खड़ा था, और वहाँ भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष खड़ा था, और एक स्पष्ट आज्ञा थी। सर्प ने कहा कि मृत्यु न आएगी, और यह कि उनकी आँखें खुल जाएंगी। स्त्री ने देखा, लिया, खाया, और दिया; और उन दोनों की आँखें सचमुच खुल गईं। परन्तु उस ज्ञान ने उन्हें उससे अधिक दे दिया जो वे सह सकते थे। वे भलाई को जानते थे, परन्तु उसे करने का सामर्थ्य उनमें नहीं था। वे बुराई को जानते थे, परन्तु उसके विरुद्ध खड़े रहने का सामर्थ्य उनमें नहीं था। लज्जा आई, और भय आया, और वे उसी उपस्थिति से छिप गए जिसके सामने खड़े रहने के लिए वे बनाए गए थे। कुछ ही पीढ़ियों के भीतर, मनुष्य के हृदय में बनी हर योजना निरंतर बुराई की ओर झुकी हुई थी, और इससे प्रभु का हृदय दुःखी हुआ। फिर भी जब न्याय बीत गया, तो एक पुरुष ने एक वेदी बनाई, और प्रभु ने भेंट को सूंघा, और अपने हृदय में एक प्रतिज्ञा कही। नूह को कैसे पता चला कि एक बलिदान बुराई का उत्तर देगा? इस प्रश्न को अंत तक थामे रखो, क्योंकि इसका उत्तर एक और वृक्ष पर, एक और भेंट के द्वारा, एक ही बार में सदा के लिए दिया गया है। प्रतिज्ञा दृढ़ खड़ी है: जो कोई सुनेगा वह सुरक्षित रहेगा, और बुराई के भय से विश्राम पाएगा। इसे खोज निकालो।

इस अध्ययन में उत्तर दिए गए तीन प्रश्न:

1. आज हर व्यक्ति के सामने कौन-सी दो बातें रखी गई हैं, और दुष्टता किस प्रकार का हृदय बनाती है?
2. भले और बुरे के ज्ञान ने पुरुष और स्त्री में क्या किया, और वे यहोवा की उपस्थिति से क्यों छिप गए?
3. जब मनुष्य के हृदय की हर एक योजना निरन्तर बुरी ही थी, तब उस बुराई का उत्तर क्या था, और कौन बुराई के भय से विश्राम पाएगा?

ग्रीक मुख्य शब्द

“विवेक करना” — **G1253 diakrisis** — न्याय करना, विवेक करना

पूरे अध्ययन को एक शब्द में: भले और बुरे में भेद करने के लिए अभ्यास से पक्की की हुई इन्द्रियाँ (इब्रानियों 5:14)

“इंद्रियाँ” — **G145 aistheterion** — समझने की शक्ति, बोध
अभ्यास से विवेक बढ़ता है — इंद्रियों को प्रशिक्षित होना चाहिए

“अच्छा” — **G2570 kalos** — अच्छा, ईमानदार, योग्य
उस भलाई को पहचानना जिसे एक पूर्ण विकसित व्यक्ति समझने में सक्षम होता है

“बुरा” — **G2556 kakos** — दुष्ट, बुरा, हानिकारक
एक परिपक्व व्यक्ति जिस बुराई को पहचानने और अस्वीकार करने में समर्थ होता है

“वृक्ष” — **G3586 xylon** — लकड़ी, एक वृक्ष, एक लाठी
एक वृक्ष के द्वारा वह ज्ञान आया जो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर था; एक वृक्ष पर उसके पापों को उठाया गया (1 पतरस 2:24)

हिब्रू मुख्य शब्द

“बुरा” — **H7451 ra** — बुरा, दुष्ट, विपत्ति, दुःख, दुर्दशा
मूल शब्द जो पूरे अध्ययन में बार-बार भले के विपरीत रखा गया है

“अच्छा” — **H2896 towb** — अच्छा, सुखद, भला
हमारे सामने जीवन के साथ रखा गया (व्यवस्थाविवरण 30:15) — जिसे प्रभु भला कहते हैं वह वास्तव में भला है

“जानना” — **H3045 yada** — जानना, समझना, विवेक करना
बुरे और भले की पहचान — सर्प का वचन, और मनुष्य का भार

“ज्ञान” — **H1847 daath** — ज्ञान, विवेक
वृक्ष का नाम — भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष

“भयभीत” — **H3372 yare** — डरना, भयभीत होना; आदर करना
अवज्ञा का पहला फल: मैं डर गया, और मैंने अपने आप को छिपा लिया

“उपस्थिति” — **H6440 panim** — चेहरा, मुखमुद्रा
उसकी उपस्थिति से छिपना उसके मुख से छिपना है

“विश्वास” — **H982 batach** — विश्वास करना, भरोसा करना, सुरक्षित अनुभव करना
भय के विरुद्ध उत्तर: जिस समय मैं डरने लगूं, उसी समय मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा (भजन संहिता 56:3)

“संकट” — **H6869 tsarah** — कष्ट, संकट, वेदना
वह संकीर्ण स्थान जिसमें बुराई किसी व्यक्ति को बंद कर देती है (नीतिवचन 1:27)

“व्याकुलता” — **H6695 tsuqah** — व्याकुलता, संकट
(नीतिवचन 1:27) आत्मा पर शत्रु का दबाव

“प्रचलित” — **H3928 limmud** — सिखाया गया, प्रयोग किया गया
यिर्मयाह 13:23 (Jeremiah 13:23) तक बुराई सीखी हुई है, यहां तक कि वह मनुष्य की अपनी ही चमड़ी के समान हो गई है

“कल्पना” — **H3336 yetser** — कल्पना, रचना, उद्देश्य
जो परमेश्वर ने बाढ़ से पहले, और उसके बाद मनुष्य के हृदय में देखा (उत्पत्ति 6:5; 8:21)

खुलने वाला लंगर

इब्रानियों 5:14 पर अन्न सयानों के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते, भले बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं। **[G2556 kakos ⚑] [G2570 kalos ⚑] [G1253 diakrisis ⚑] [G145 aistheterion ⚑]**

ठोस आहार = सिद्ध लोगों के लिए → अभ्यास के कारण जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ भले और बुरे में भेद करने के लिये पक्की हो गई हैं।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — यही इस पूरे अध्ययन का ढांचा है: अच्छाई और बुराई को पवित्रशास्त्र में साथ-साथ नाम दिया गया है। यह नहीं कि व्यक्ति को बुराई का स्वाद चखना चाहिए, बल्कि यह कि इंद्रियों को इस योग्य प्रशिक्षित किया जाए कि वे उसे पहचान सकें और उसे अस्वीकार कर सकें। यह अध्ययन पहले उन लोगों को देखता है जो बुराई करते हैं, फिर उस बगीचे को जहां यह ज्ञान प्रविष्ट हुआ, फिर उस वेदी को जहां बुराई का उत्तर दिया गया।)

I. जीवन और भलाई, मृत्यु और बुराई — तुम्हारे सामने रखे गए दोनों

A. व्यवस्थाविवरण 30:15 “सुन, आज मैंने तुझको जीवन और मरण, हानि और लाभ दिखाया है। **[H7451 ra ⚑] [H2896 towb ⚑]**

आज तेरे सम्मुख यह रखा गया है: जीवन + भलाई → मृत्यु + बुराई।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — बुराइ, रा (H7451, बुराइ), का पूरे शास्त्र में बार-बार भलाइ, ताव (H2896, भलाइ), के विपरीत रखा गया है। इन दोनों को साथ-साथ इसलिए रखा गया है ताकि मनुष्य उनमें भेद करना सीख सके, ठीक वैसे ही जैसे उजियाले को अंधकार से अलग किया गया था।)

B. मीका 3:1 मैंने कहा: हे याकूब के प्रधानों, हे इस्राएल के घराने के न्यायियों, सुनो! क्या न्याय का भेद जानना तुम्हारा काम नहीं? **[H7451 ra ⚑] [H2896 towb ⚑] [H3045 yada ⚑]** (2) तुम तो भलाई से बैर, और बुराई से प्रीति रखते हो, मानो, तुम, लोगों पर से उनकी खाल उधेड़ लेते, और उनकी हड्डियों पर से उनका माँस नोच लेते हो;

क्या न्याय को जानना तुम्हारे लिये उचित नहीं है? → जो भलाई से बैर रखते और बुराई से प्रेम करते हैं।

C. नीतिवचन 1:24 मैंने तो पुकारा परन्तु तुम ने इन्कार किया, और मैंने हाथ फैलाया, परन्तु किसी ने ध्यान न दिया **[H6695 tsuqah ⚑] [H6869 tsarah ⚑]** (25) वरन् तुम ने मेरी सारी सम्मति को अनसुना किया, और मेरी ताड़ना का मूल्य न जाना; (26) इसलिए मैं भी तुम्हारी विपत्ति के समय हँसूँगी; और जब तुम पर भय आ पड़ेगा, तब मैं ठट्ठा करूँगी। (27) वरन् आँधी के समान तुम पर भय आ पड़ेगा, और विपत्ति बवण्डर के समान आ पड़ेगी, और तुम संकट और सकेती में फँसोगे, तब मैं ठट्ठा करूँगी। (28) उस समय वे मुझे पुकारेंगे, और मैं न सुनूँगी; वे मुझे यत्न से तो ढूँढ़ेंगे, परन्तु न पाएँगे।

मैंने तो पुकारा परन्तु तुम ने इन्कार किया → उस समय वे मुझे पुकारेंगे, और मैं न सुनूँगी.

(मेरे व्यक्तिगत विचार — संकट, त्सराह (H6869, संकट), एक मूल शब्द से आता है जिसका अर्थ है संकीर्ण: घिरी हुई आत्मा का तंग, बंद स्थान। पीड़ा, त्सुकाह (H6695, पीड़ा), उस घेराबंदी का दबाव है। उस संकीर्ण अंधकार में प्रभु अपने उद्धार की ज्योति लाते हैं, यदि व्यक्ति सुनने को तैयार हो।)

D. नीतिवचन 1:29 क्योंकि उन्होंने ज्ञान से बैर किया, और यहोवा का भय मानना उनको न भाया। **[H7451 ra ⚑] [H8085 shama ⚑] [H1847 daath ⚑]** (30) उन्होंने मेरी सम्मति न चाही वरन् मेरी सब ताड़नाओं को तुच्छ जाना। (31) इसलिए वे अपनी करनी का फल आप भोगेंगे, और अपनी युक्तियों के फल से अघा जाएँगे। (32) क्योंकि अज्ञानियों का भटक जाना, उनके घात किए जाने का कारण होगा, और निश्चिन्त रहने के कारण मूर्ख लोग नाश होंगे; (33) परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा, और विपत्ति से निश्चिन्त होकर सुख से रहेगा।"

उन्होंने ज्ञान से बैर रखा + यहोवा के भय को न चुना → परन्तु जो कोई मेरी सुनता है वह निडर रहेगा, और वह बुराई के भय से शान्त रहेगा।

E. यशायाह 5:20 हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं! **[H2896 towb ⚑] [H7451 ra ⚑]**

हाय = बुराई को भलाई कहना + भलाई को बुराई कहना → अंधकार को उजियाले के लिये ठहराना।

II. वे लोग जो बुराई करते हैं — चार पहचान चिन्ह, और धर्मियों का मार्ग

A. यिर्मयाह 4:22 "क्योंकि मेरी प्रजा मूर्ख है, वे मुझे नहीं जानते; वे ऐसे मूर्ख बच्चें हैं जिनमें कुछ भी समझ नहीं। बुराई करने को तो वे बुद्धिमान हैं, परन्तु भलाई करना वे नहीं जानते।" **[H3045 yada ⚑]**

बुराई करने में बुद्धिमान + भलाई करने का उन्हें कोई ज्ञान नहीं = उन्होंने मुझे नहीं जाना।

B. नीतिवचन 24:8 जो सोच विचार के बुराई करता है, उसको लोग दुष्ट कहते हैं। **[H2803 chashab ⚑]**

जो बुराई करने की युक्ति करता है = वह एक शरारती व्यक्ति है।

C. यिर्मयाह 13:23 क्या कूशी अपना चमड़ा, या चीता अपने धब्बे बदल सकता है? यदि वे ऐसा कर सके, तो तू भी, जो बुराई करना सीख गई है, भलाई कर सकेगी। **[H3928 limmud ⚑]**

बुराई करने के अभ्यासी = कूशी की खाल + चीते के धब्बे, नहीं बदलते।

D. नीतिवचन 4:14 दुष्टों की डगर में पाँव न रखना, और न बुरे लोगों के मार्ग पर चलना। **[H7451 ra ⚑]** (15) उसे छोड़ दे, उसके पास से भी न चल, उसके निकट से मुड़कर आगे बढ़ जा। (16) क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें, तो उनको नींद नहीं आती; और जब तक वे किसी को ठोकर न खिलाएँ, तब तक उन्हें नींद नहीं मिलती। (17) क्योंकि वे दुष्टता की रोटी खाते, और हिंसा का दाखमधु पीते हैं।

प्रवेश न करना + उस से मुड़ जाना → क्योंकि वे बुराई किए बिना सो नहीं सकते।

E. नीतिवचन 4:18 परन्तु धर्मियों की चाल, भोर-प्रकाश के समान है, जिसकी चमक दोपहर तक बढ़ती जाती है। (19) दुष्टों का मार्ग घोर अंधकारमय है; वे नहीं जानते कि वे किस से ठोकर खाते हैं।

धर्मियों का मार्ग = चमकती हुई ज्योति, जो पूर्ण दिन तक अधिकाधिक बढ़ती जाती है → दुष्टों का मार्ग = अंधकार।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — ये उन लोगों के चिन्ह हैं जो बुराई करते हैं। उनमें भलाई करने का ज्ञान नहीं होता। वे जानबूझकर हानि की योजना बनाते हैं। वे इसके इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि यह उनकी अपनी त्वचा के समान बन जाता है। अंत में वे तब तक सो नहीं पाते जब तक उन्होंने कुछ गलत न किया हो। और जो बात वे समझ नहीं पाते, उसका एक भाग यह है: वे तब तक नहीं देखते, जब तक बहुत देर नहीं हो जाती, कि वे अपनी ही आत्मा को कितनी हानि पहुँचा रहे हैं।)

III. पंचग्रंथ — उत्पत्ति: वृक्ष, पतन, और दुष्ट हृदय

A. उत्पत्ति 2:8 और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर, अदन में एक वाटिका लगाई; और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया। **[H7451 ra ⚑] [H1847 daath ⚑] [H2896 towb ⚑]** (9) और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भाँति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं, उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। (प्रका. 2:7, प्रका. 22:14)

हर वृक्ष जो देखने में मनोहर और खाने में उत्तम था + जीवन का वृक्ष + भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — पेड़ों पर ध्यान दें। हर पेड़ भोजन के लिए उत्तम था। फिर जीवन का पेड़ अलग खड़ा था। और भले और बुरे के ज्ञान का पेड़ भी अलग खड़ा था। दो पेड़ बीच में खड़े थे, और उनमें से केवल एक ही वर्जित था।)

B. उत्पत्ति 2:15 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रखवाली करे।

यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को लिया + उसे बगीचे में रखा → उसकी सेवा करने और उसकी रखवाली करने के लिए।

C. उत्पत्ति 2:16 और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के किसी भी वृक्षों का फल खा सकता है; **[H7451 ra ⚑] [H2896 towb ⚑] [H1847 daath ⚑]** (17) पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

बारी के सब वृक्षों का फल बेधड़क खाना → परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाना → जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन तू अवश्य मर जाएगा।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — प्रभु ने बहुत कुछ दिया: हर एक वृक्ष का फल, स्वतंत्रता से खाना। उसने केवल एक वृक्ष से मना किया। और यह आज्ञा उस पुरुष को दी गई थी, क्योंकि स्त्री तब तक नहीं बनाई गई थी।)

D. उत्पत्ति 3:1 यहोवा परमेश्वर ने जितने जंगली पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, "क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, 'तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना'?" (प्रका. 12:9, प्रका. 20:2) **[H3045 yada ⚑]** (2) स्त्री ने सर्प से कहा, "इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं; (3) पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न ही उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।" (4) तब सर्प ने स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे (5) वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।"

परमेश्वर ने कहा → सर्प ने कहा: तुम निश्चय न मरोगे + तुम परमेश्वरों के समान हो जाओगे, और भले-बुरे के ज्ञाता बनोगे।

E. उत्पत्ति 3:6 अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, जो उसके साथ था और उसने भी खाया। (1 तीमु. 2:14) **[H3045 yada ⚑] [H2896 towb ⚑]** (7) तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़-जोड़कर लंगोट बना लिये।

उसने देखा + लिया + खाया + दिया → तब उन दोनों की आंखें खुल गईं, और उन्हें मालूम हुआ कि वे नंगे हैं।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — इससे पहले कोई लज्जा नहीं थी। ज्ञान आया, और सबसे पहली बात जो उसने उन्हें दिखाई, वह थी उनकी अपनी नग्नता। भले और बुरे का ज्ञान, बुराई के विरुद्ध शक्ति के बिना, लज्जा उत्पन्न करता है।)

F. उत्पत्ति 3:8 तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। **[H6440 panim ⚑] [H7307 ruach ⚑]**

उन्होंने यहोवा परमेश्वर का शब्द सुना → और यहोवा परमेश्वर की उपस्थिति से छिप गए।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — उपस्थिति पानीम (H6440, उपस्थिति) है, अर्थात् मुख। अनाज्ञाकारिता ने उन्हें उस मुख से छिपाने पर विवश कर दिया जिसके सामने वे खड़े होने के लिए बनाए गए थे। और "दिन की ठंडक" का, इब्री भाषा में, अर्थ है दिन की हवा।)

G. उत्पत्ति 3:9 तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, "तू कहाँ है?" **[H3372 yare ⚑]** (10) उसने कहा, "मैं तेरा शब्द वाटिका में सुनकर डर गया, क्योंकि मैं नंगा था; इसलिए छिप गया।"

मैंने तेरा शब्द सुना + और मैं डर गया, क्योंकि मैं नंगा था → इसलिए मैं छिप गया।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — भयभीत, yare (H3372, भयभीत): पूरे पवित्रशास्त्र में पहला भय पहली अवज्ञा के बाद आता है। बुराई के ज्ञान के साथ भय ने प्रवेश किया।)

H. भजन संहिता 56:3 जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा रखूँगा। **[H982 batach ⚑] [H3372 yare ⚑]** (4) परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा, परमेश्वर पर मैंने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूँगा। कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है?

जिस समय मैं भय खाऊं = मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा → मैं न डरूंगा, शरीर मेरा क्या कर सकता है।

I. भजन संहिता 56:11 मैंने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, मैं न डरूँगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? **[H3372 yare ⚑] [H982 batach ⚑]**

परमेश्वर पर रखा भरोसा = मैं इस से न डरूंगा कि मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — इस एक भजन की दोनों पंक्तियों को साथ-साथ रखें। पहले: "जिस समय मैं डरूं, उस समय मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा।" आगे: "मैं न डरूंगा।" विश्वास दोनों के बीच खड़ा है — मन को डर के ऊपर ठहराया गया है, हृदय की रखवाली के लिए। यह आदम के "मैं डर गया, इसलिये मैं ने अपने आप को छिपा लिया" का उत्तर देता है: उपस्थिति से छिपने के लिए नहीं, बल्कि वचन पर भरोसा रखने के लिए।)

J. उत्पत्ति 3:22 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है: इसलिए अब ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे।" (प्रका. 2:7, प्रका. 22:2,14,19, उत्प. 3:24, प्रका. 2:7)
[H3045 yada ⚑] (23) इसलिए यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की वाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिसमें से वह बनाया गया था। (24) इसलिए आदम को उसने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को, और चारों ओर घूमनेवाली अग्निमय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।

मनुष्य हम में से एक के समान हो गया है, कि वह भले और बुरे को जाने → निकाल दिया गया + एक ज्वलित तलवार, जीवन के वृक्ष के मार्ग की रक्षा करने के लिए।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — भले और बुरे के ज्ञान में कुछ ऐसा था जो मनुष्य की सहनशक्ति से बाहर हो गया। उसका ज्ञान उसकी शक्ति से आगे निकल गया। वह अब भले को जान तो सकता था, परन्तु उसे कर नहीं सकता था। वह बुरे को जान तो सकता था, परन्तु उसके सामने खड़ा नहीं रह सकता था। और तलवार जीवन के वृक्ष के मार्ग की रखवाली करती थी, कि वह उस टूटी हुई अवस्था में खाकर सदा जीवित न रहे।)

K. उत्पत्ति 6:5 यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है। (भज. 53:2) **[H6087 atsab ⚑] [H7451 ra ⚑] [H3336 yetser ⚑]** (6) और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ।

उसके मन के विचारों की हर कल्पना = निरन्तर केवल बुराई ही → और इससे उसका मन दुखित हुआ।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — कल्पना yetser (H3336, कल्पना) है, वह जो रचा गया है: हृदय में रचे गए उद्देश्य और इच्छाएँ। परमेश्वर ने दुष्टता देखी, जो बुराई का फल है। बुराई हृदय के रचे गए उद्देश्यों से आती है। और इससे उसका हृदय दुखित हुआ। अब भी, जब पवित्र आत्मा दुखित होता है, तो यह इसलिए होता है क्योंकि बुरे विचार, इच्छाएँ, और उद्देश्य भीतर संचित रखे जाते हैं।)

L. उत्पत्ति 8:20 तब नूह ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई; और सब शुद्ध पशुओं, और सब शुद्ध पक्षियों में से, कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया। **[H7451 ra ⚑] [H3336 yetser ⚑] [H7381 reyach ⚑] [H5207 nichoach ⚑] [H5930 olah ⚑]** (21) इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा, "मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को श्राप न दूँगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तो भी जैसा मैंने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूँगा। (22) अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठंडा और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे।"

नूह ने होमबलि चढ़ाए → यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध सूंघी → मैं फिर कभी भूमि को श्राप न दूंगा।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — एक प्रश्न जिसकी खोज करने योग्य है: नूह को यज्ञ करने के बारे में कैसे पता चला? क्या उसने कोई वाणी सुनी थी? क्या यज्ञ का संबंध बुराई से था? मनुष्य का हृदय अब भी उसकी युवावस्था से बुरा था। फिर भी जब होमबलि चढ़ाई गई, तो प्रभु ने उसके हृदय में शान्ति कही, मानो केवल एक यज्ञ ही बुराई का उत्तर दे सकता हो, क्योंकि अग्नि ने भेंट को भस्म कर दिया। इस प्रश्न को थामे रखो। पवित्रशास्त्र इसका उत्तर एक और वृक्ष पर देता है।)

समापन

नीतिवचन 1:33 परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा, और विपत्ति से निश्चिन्त होकर सुख से रहेगा।" **[H7451 ra ⚑] [H8085 shama ⚑]**

जो कोई सुनता है = निडर सुरक्षित रहता है + बुराई के भय से शांति में रहता है।

1 पतरस 2:24 वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ। उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। (यशा. 53:4-5,12, गला. 3:13) **[G3586 xylon ⚑] [G399 anaphero ⚑]**

उसने अपनी ही देह में हमारे पापों को क्रूस पर उठा लिया → पापों के लिये मरकर, धार्मिकता के लिये जीवित रहें + जिसके मार खाने से तुम चंगे हुए।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — नूह की वेदी का प्रश्न यहाँ उत्तरित होता है। एक वृक्ष के द्वारा बुराई का ज्ञान आया। एक वृक्ष पर वह बुराई उठा ली गई। जिस बलिदान की ओर नूह ने हाथ बढ़ाया था, वह परमेश्वर ने स्वयं प्रदान किया: अपने ही आपको, अपनी ही देह को, एक ही बलिदान। जो कोई सुनेगा वह बुराई के भय से विश्राम पाएगा, क्योंकि उस बुराई का उत्तर दिया जा चुका है।)

अभ्यास प्रश्नोत्तरी

1. व्यवस्थाविवरण 30:15 — देख, मैंने आज तेरे साम्हने रखा है:

a) केवल आशीष और शाप
b) जीवन और भलाई, और मृत्यु और बुराई
c) व्यवस्था और आज्ञा

2. उत्पत्ति 2:16-17 — बारी के हर वृक्ष का फल तू बेधड़क खा सकता है, केवल इसे छोड़कर:

a) जीवन का वृक्ष
b) देखने में मनोहर हर वृक्ष
c) भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष

3. नीतिवचन 1:33 — कौन निडर बसेगा, और बुराई के भय से चैन से रहेगा?

a) जो कोई मेरी सुनता है
b) जो मुझे यत्नपूर्वक ढूंढ़ते हैं
c) अपनी समृद्धि में भोले-भाले लोग

4. यिर्मयाह 13:23 — जो बुराई करने के अभ्यासी हैं, वे भलाई कर सकते हैं, ज्योंही:

a) उन्हें भला करना सिखाया जाता है
b) कूशी अपनी चमड़ी को, और चीता अपने चित्तों को बदल सकता है
c) उनके आँचल उघाड़े गए हैं

5. उत्पत्ति 3:8 — आदम और उसकी पत्नी अपने आपको किससे छिपा लिया:
a) यहोवा परमेश्वर की उपस्थिति से, वृक्षों के बीच
b) बगीचे के पूर्व में ज्वलंत तलवार
c) सर्प की आवाज़

6. उत्पत्ति 3:22-24 — मनुष्य को बारी से क्यों निकाल दिया गया?
a) कहीं ऐसा न हो कि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल फिर से खाए
b) क्योंकि सर्प अभी भी बगीचे में था
c) कहीं ऐसा न हो कि वह जीवन के वृक्ष से भी लेकर खाए, और सर्वदा जीवित रहे

7. उत्पत्ति 8:21 — जब यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाई, तब उस ने कहा कि मनुष्य के मन की कल्पना है:
a) निरन्तर केवल बुराई ही
b) उसके बचपन से ही बुराई
c) भला करने की ओर मुड़ गया

उत्तर कुंजी: 1-b, 2-c, 3-a, 4-b, 5-a, 6-c, 7-b

यह अध्ययन कैसे शाखाओं में विभाजित होता है

छाया किस प्रकार ज्योति ले आती है: जीवन का वृक्ष बीच में खड़ा था (उत्पत्ति 2:9) → जो जय पाए, उसे मैं जीवन के वृक्ष में से खाने को दूंगा (प्रकाशितवाक्य 2:7)। तलवार के द्वारा सुरक्षित रखा गया वृक्ष मसीह में फिर से खोल दिया गया है।

शब्दों का महत्व कैसे है: नूह की भेंट की सुखदायक सुगन्ध (उत्पत्ति 8:21) → मसीह ने अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिए परमेश्वर को भेंट और बलिदान करके दे दिया (इफिसियों 5:2)। जो सुगन्ध नूह ने दी, पुत्र ने उसे पूरा किया।

यह आप पर कैसे लागू होता है: उन्होंने प्रभु की उपस्थिति से, उसके मुख से अपने आप को छिपा लिया (उत्पत्ति 3:8), परन्तु शुद्ध हृदय के लोग परमेश्वर को देखेंगे (मत्ती 5:8), और उसके दास उसका मुख देखेंगे (प्रकाशितवाक्य 22:4)। भय ने मुख को छिपाया। भरोसा उसे फिर से लौटाता है (भजन संहिता 56:11)।

→ यह हृदय को कैसे स्पर्श करता है: उसके मन के विचारों की कल्पना नित्य बुरी ही रहती थी (उत्पत्ति 6:5) → परमेश्वर का वचन हृदय के विचारों और मनसाओं को जांचने वाला है (इब्रानियों 4:12)। जिससे उसे तब दुःख हुआ था, वचन अब उसकी जांच करता है।

अनंतकाल के लिए इसका अर्थ यह है: जो ज्ञान मनुष्य की सामर्थ्य से परे चला गया था, उसका उत्तर उन ज्ञानेन्द्रियों में मिलता है जो भले और बुरे में भेद करने के लिए अभ्यास द्वारा साधी गई हैं (इब्रानियों 5:14), और जो कोई सुनता है, वह बुराई के भय से विश्राम पाएगा (नीतिवचन 1:33)। जो भय बाटिका में प्रवेश हुआ था, वह सुनने वाले हृदय में शांत हो जाता है।

उद्धार पाने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

> *हमारे बाइबल अध्ययन को देखिए — "मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए"*

SOURCES & CREDITS

Scripture: Hindi Indian Revised Version Bible (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.
Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEPBible TVTMS (CC BY 4.0).
Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEPBible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0); Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).
Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).
© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).